**महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का इंजीनियर्स प्रीमियर लीग पुरस्कार वितरण समारोह में उद्बोधन**

स्थान:- भोपाल, दिनांक:- 28 फरवरी, 2013 समय:- शाम 4 बजे

राजधानी भोपाल में पहली बार इंजीनियरिंग से जुड़ी खेल प्रतिभाओं को आगे आने का मौका देने के लिए आयोजित इंजीनियर्स प्रीमियर लीग पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह हर्ष की बात है कि पहली बार आयोजित इस प्रतियोगिता में इंजीनियरिंग कालेजों के छात्रों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया है। मैं प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए कॉलेज के पदाधिकारियों को बधाई देता हूं।

हमारा देश विश्व में युवाओं की सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। हमारे देश में हर क्षेत्र में युवाओं ने अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इंजीनियरिंग और तकनीकी के क्षेत्र में हमारे देश के युवा विश्व में देश का नाम रोशन कर रहे हैं। उनके परिश्रम का परिणाम है कि हमारा देश इंजीनियरिंग और तकनीक के क्षेत्र में विकासशील देशों की अग्रणी पंक्ति में स्थान बनाने में सफल हुआ है। ऐसे युवा इंजीनियर और तकनीकी क्षेत्र से जुड़े हमारे नौजवान खेल प्रतिभा में भी कम नहीं है। आवश्यकता उनकी इस प्रतिभा को सामने लाने और अवसर उपलब्ध कराने की है।

इंजीनियरिंग के छात्रों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए कठिन परिश्रम और निरंतर अध्ययन की आवश्यकता होती है। ऐसे में वह मानसिक तनाव में ग्रस्त हो जाते हैं। उनको मानसिक तनाव से मुक्त करने के लिए खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन बहुत कारगर सिद्ध होगा।

तीरंदाजी, तैराकी, कश्तीचालन और घुड़सवारी तथा दौड़ आदि खेल तो हमारे पारम्परिक विरासत के खेल हैं। इन खेलों में हमें हमारे खिलाड़ियों से अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सर्वोच्च प्रदर्शन की उम्मीद हमेशा रहती है।

खिलाड़ी हमारे देश का गौरव हैं। इनकी प्रतिभाओं को निखारने में सरकार के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों को सहयोग करना चाहिये। पहले हमारे बड़े बुजुर्ग कहा करते थे “पढ़ोगे-लिखोगे बनोगे नवाब-खेलोगे कूदोगे बनोंगे खराब।” उस समय पढ़ाई- लिखाई को खेल-कूद से ज्यादा अहम् माना जाता था। आज परिस्थितियां बिलकुल अलग हैं। पढ़ाई- लिखाई के साथ-साथ खेल-कूद की प्रतिभा का होना सोने पर सुहागा जैसा हो गया है।

खेलों को बढ़ावा देने की योजनायें सिर्फ शहरों तक ही सीमित न रहें, ग्रामीण क्षेत्रों में भी समान रूप से खेलों को बढ़ावा दिया जाए। ग्रामीण और जिला स्तर पर भी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाएं, जिससे खिलाड़ियों को खुला और नया वातावरण मिले। खिलाड़ियों में राष्ट्र-भावना को मजबूत बनाएं। खिलाड़ियों से कहना चाहूंगा कि व्यावसायिक मानसिकता से बचने की कोशिश करें। ग्रामीण अंचलों के समग्र विकास के साथ-साथ ग्रामीण अंचलों में छुपी खेल प्रतिभाओं को खोज कर आगे बढ़ाना भी हम सब की जिम्मेदारी है।

जिन्दगी के हर क्षेत्र में सुनिश्चित तरक्की के लिए खेल भावना पहली आवश्यकता है। खेल-कूद के आयोजन, खिलाड़ियों के साथ-साथ खेल प्रेमियों और दर्शकों के लिए भी प्रेरणा के रुत्रोत होते हैं।

मुझे बताया गया है कि इस प्रतियोगिता को आयोजित करने में आयोजनकर्ताओं को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा है। हमारे यहां सबसे बड़ी दिक्कत खेल मैदान उपलब्ध होना है। यहां खेल मैदान बढ़ाने की आवश्यकता है। जो खेल मैदान हैं वह खाली नहीं रहते हैं। इस ओर हमारी सरकार काम कर रही है। उसने खेल मैदान तैयार करने के लिए कुछ योजनाएं भी बनाई हैं। मुझे आशा है कि आने वाले दिनों में खेल मैदान की समस्या खत्म हो जायेगी।

मैं पुरस्कृत खिलाड़ियों और टीमों को बधाई देता हूं और उम्मीद करता हूं कि अन्य टीमें नतीजों को पूरी खेल भावना के साथ स्वीकार करते हुए भविष्य में और श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए जमकर अभ्यास करेंगी।

**जय हिन्द।**